Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-5, Issue-2, Continuous Issue-31, May - June 2025

हिमांशी शेलत की कहानी 'ठेकाणु' का दिव्यांग विमर्श के संदर्भ में विश्लेषण

- Dr. Rajendrakumar Rameshbhai Bambhaniya

Acknowledgement : This research paper is an outcome of the Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi Funded Minor Research Project (2024-25) titled 'Divyang Discourse in Gujarati Literature: A Multidisciplinary Study' awarded to Dr. Rajendrakumar Rameshbhai Bambhaniya, Assistant Professor, Department of Gujarati, Shri R. R. Lalan College, Bhuj. The entire credit for this Research Paper goes to the ICSSR.

सर्जक परिचय:

हिमांशी शेलत गुजराती साहित्य की एक सशक्त लेखिका हैं, जिनका जन्म 8 जनवरी, 1947 को गुजरात के सूरत शहर में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम इंदुभाई शेलत और माता का नाम सुधाबहेन शेलत था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा सूरत की प्रतिष्ठित जीवनभारती शाला में हुई, जहाँ उन्होंने प्राथमिक से लेकर मैट्रिक तक का अध्ययन पूर्ण किया।

उनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनके दादा कालिदास शेलत का बहुत बड़ा योगदान रहा, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी 'प्रताप' नामक समाचार पत्र निकाला था। साथ ही, अपनी माता सुधाबहेन से उन्हें वाचन और संगीत की रुचि विरासत में मिली। हिमांशी जी ने चित्रकला में भी विशेष रुचि दिखाई और वे जाने-माने चित्रकार वासुदेव स्मार्ट की शिष्या रहीं।

उच्च शिक्षा की बात करें तो उन्होंने सूरत के एम. टी. बी. आर्ट्स कॉलेज से अंग्रेजी मुख्य विषय और गुजराती गौण विषय के साथ स्नातक (B.A.) और स्नातकोत्तर (M.A.) की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1980 में उन्होंने डॉ. एच. सी. त्रिवेदी के मार्गदर्शन में वी. एस. नायपॉल के उपन्यासों पर शोध कर पी.एच.डी. की पदवी हासिल की। उन्होंने 1968 से 1994 तक अपनी ही संस्था में अंग्रेजी के व्याख्याता के रूप में कार्य किया, किंतु शिक्षा के गिरते स्तर और साहित्यानुराग की कमी से व्यथित होकर उन्होंने 1994 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (VRS) ले ली।

सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्होंने स्वयं को समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने रेलवे प्लेटफॉर्म पर रहने वाले बच्चों, झुग्गी-झोपड़ियों, रिमांड होम और अनाथालयों के बच्चों के साथ काम किया

। यहाँ तक कि उन्होंने सूरत की वेश्याओं के पुनर्वास के लिए भी प्रयास किए । उनके ये जमीनी अनुभव ही उनकी कहानियों की 'कच्ची सामग्री' बने । पशु प्रेम भी उनके व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'विक्टर' में बखूबी दर्शाया है ।

हिमांशी जी को उनके उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। उनके कहानी संग्रह 'अन्तराल' को गुजराती साहित्य परिषद का पुरस्कार मिला । उनके प्रसिद्ध संग्रह 'अंधारी गलीमां सफेद टपकां' को धूमेकतु पुरस्कार और केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ । हालांकि, 2001 के बाद उन्होंने नए लेखकों को अवसर देने के लिए किसी भी प्रकार का पुरस्कार स्वीकार न करने की घोषणा कर एक नई मिसाल पेश की ।

कहानी 'ठेकाणु' का संक्षिप्त सारांश :

'ठेकाणु' कहानी एक वृद्ध व्यक्ति वसंतलाल के इर्द-गिर्द घूमती है, जो संभवतः स्मृतिभ्रंश या अल्जाइमर जैसी मानसिक अक्षमता से जूझ रहे हैं । वसंतलाल अक्सर अपना घर भूल जाते हैं और कहीं खो जाते हैं । इस समस्या के समाधान के रूप में उनके परिवार के सदस्य (उनके तीन बेटे और बहुएं) सर्वसम्मति से निर्णय लेते हैं कि उनकी कमीज (कफनी) के सामने वाले हिस्से पर एक प्लास्टिक कवर में उनके नाम और पते की पर्ची सुरक्षा पिन से लगा दी जाए ।

कहानी वसंतलाल के अतीत और वर्तमान के बीच एक गहरा विरोधाभास प्रस्तुत करती है। एक समय था जब वसंतलाल का समाज और घर में दबदबा था, उनकी 'दहाड़' से लोग कांपते थे । लेकिन आज उनकी मानसिक स्थिति ऐसी है कि वे अपने घर के बाहर के चबूतरे पर एक मूक दर्शक की तरह बैठे रहते हैं । एक दिन वे अचानक गायब हो जाते हैं । परिवार में अफरा-तफरी मचती है, लेकिन यह चिंता स्नेह से ज्यादा एक 'मगजमारी' या परेशानी के रूप में दिखाई देती है ।

पूरी रात परिवार और पड़ोसी उनके बारे में बातें करते हैं। अंततः सुबह वे एक बगीचे के बाहर भिखारियों और साधुओं के साथ चाय-बिस्कुट खाते हुए मिलते हैं । जब उन्हें घर लाया जाता है, तो उनका बड़ा बेटा उन पर बहुत क्रोधित होता है । कहानी के अंत में वसंतलाल अपनी कमीज से उस पते वाली पर्ची को हटाते हैं और उसके टुकड़े-टुकड़े कर उड़ा देते हैं, जो उनकी आंतरिक चेतना और गरिमा की पुनर्प्राप्ति का संकेत है ।

दिव्यांग विमर्श के संदर्भ में क 'ठेकाणु' कृति का अध्ययन :

'ठेकाणु' कहानी दिव्यांग विमर्श के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती है। यहाँ दिव्यांगता केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और संज्ञानात्मक अक्षमता के रूप में उपस्थित है, जो वृद्धावस्था के साथ जुड़कर और भी जटिल हो जाती है। दिव्यांग व्यक्ति के साथ समाज का व्यवहार अक्सर उसे एक 'वस्तु'

के रूप में देखने का होता है। वसंतलाल के गले या जेब पर नाम-पते की पर्ची लटकाना उन्हें एक व्यक्ति से एक 'पार्सल' या 'बैग' में बदल देता है। लेखिका लिखती हैं:

"लेकिन जेब में तो कोई देखे या न देखे, इससे बेहतर है कि बाहर ही, एक प्लास्टिक कवर में रखकर सेफ्टीपिन से चिपका दें तो! जैसे बैग पर होता है, वैसे ही।" (शेलत, हिमांशी)

यह संवाद दर्शाता है कि परिवार के लिए वसंतलाल की मानवीय गरिमा से अधिक उनकी 'पहचान' सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो गया था, ठीक उसी तरह जैसे किसी निर्जीव वस्तु का खो जाना रोकने के लिए उस पर टैग लगाया जाता है।

अतीत की शक्ति बनाम वर्तमान की लाचारी :

दिव्यांग विमर्श में व्यक्ति की क्षमता (Ability) और अक्षमता (Disability) के बीच का संघर्ष बहुत महत्वपूर्ण है। वसंतलाल के अतीत को याद करते हुए लेखिका बताती हैं:

"बाकी वसंतलाल का भी एक जमाना था। उनकी आवाज, नहीं उसे आवाज नहीं कहा जा सकता, उनकी दहाड़ अच्छे-अच्छों को थर्रा देती थी, उनकी चाल का ठाठ ऐसा कि राजा-महाराजाओं की गिनती नहीं।" (शेलत, हिमांशी)

आज वही व्यक्ति "मूक (मूढ़) होकर बैठा रहता है" । यह परिवर्तन दिव्यांगता के प्रति समाज के नजरिए को बदल देता है। जो व्यक्ति कभी सत्ता का केंद्र था, आज वह केवल एक 'जिम्मेदारी' बनकर रह गया है।

परिवार और समाज का दृष्टिकोण :

कहानी में परिवार के सदस्यों का व्यवहार दिव्यांगों के प्रति समाज की संवेदनहीनता को दर्शाता है। जब वसंतलाल खो जाते हैं, तो उनके प्रति सहानुभूति के बजाय झुंझलाहट ज्यादा दिखाई देती है:

"इसीलिए कहा था कि अस्पताल में रख दो। ऐसी मगजमारी तो नहीं होती! कहीं गिर गए-भटक गए तो और मुसीबत, पुलिस में खबर दे दो..." (शेलत, हिमांशी)

यहाँ अस्पताल (शायद मानसिक आरोग्यशाला) को एक सहायता केंद्र के बजाय एक ऐसी जगह के रूप में देखा जा रहा है जहाँ दिव्यांग व्यक्ति को 'छोड़' दिया जाए ताकि परिवार को 'मगजमारी' न हो। यह दिव्यांगों के प्रति 'बर्डन' (बोझ) वाली मानसिकता का परिचायक है।

दिव्यांगता और सामाजिक कलंक :

वसंतलाल के गायब होने पर बड़े बेटे के मन में जो विचार आते हैं, वे सामाजिक प्रतिष्ठा के खोने के डर से प्रेरित हैं, न कि पिता के प्रति प्रेम से:

"कल सुबह पूरा गाँव अब जान जाएगा कि वसंतलाल चले गए। लोगों को तो यही लगने वाला है कि बेटों ने सावधानी नहीं रखी इसलिए बाप घर छोड़कर चला गया। कोई तो आगे बढ़कर यह भी कहेगा कि बाप पागल हुआ वह बेटों की वजह से।" (शेलत, हिमांशी)

यह समाज का वह चेहरा है जहाँ दिव्यांग व्यक्ति की स्थिति को परिवार के 'सम्मान' से जोड़कर देखा जाता है, जिससे दिव्यांग व्यक्ति और भी अलग-थलग पड़ जाता है।

'ठेकाणु' (ठिकाना) का मनोवैज्ञानिक पहलू :

कहानी का सबसे सशक्त भाग वह है जहाँ वसंतलाल पुलिस को मिलते हैं। वे किसी आलीशान जगह के बजाय उन लोगों के बीच मिलते हैं जिन्हें समाज 'असामान्य' मानता है:

"जानते हैं कहाँ थे बाबूजी? हनुमानजी वाले नुक्कड़ पर उस बाग के बाहर सारी जमात पड़ी रहती है न? वही, वही, उसी बाग के बाहर, जहाँ वे बावा (साधु) और भिखारी बैठते हैं? दो-चार पागल भी सोए रहते हैं कभी-कभी रात में... और पुलिस को मिले तब उनके साथ बैठकर चाय और बिस्कुट खा रहे थे..." (शेलत, हिमांशी)

यहाँ लेखिका एक बहुत गहरा प्रश्न उठाती हैं। क्या वसंतलाल वास्तव में 'खो' गए थे? या उन्होंने अपना 'ठिकाना' (ठेकाणु) उन लोगों के बीच पा लिया था जो उन्हें उनके पते की पर्ची से नहीं, बल्कि एक इंसान के रूप में स्वीकार कर रहे थे? दिव्यांग व्यक्ति अक्सर उन जगहों पर अधिक सहज महसूस करता है जहाँ उसे 'सुधारने' या 'संभालने' की कृत्रिम कोशिश नहीं की जाती।

प्रतिरोध और गरिमा की बहाली :

कहानी का अंत दिव्यांग विमर्श के दृष्टिकोण से क्रांतिकारी है। घर वापस आने पर, जब उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, तो वसंतलाल जो करते हैं वह उनकी मूक क्रांति है:

"वसंतलाल ने सावधानी से जेब पर चिपकी सेफ्टीपिन खोली और प्लास्टिक के कवर में से नाम-पते वाली पर्ची निकालकर पूरी स्वस्थता के साथ उसके दो भाग किए, फिर चार, और चारों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया।" (शेलत, हिमांशी)

पर्ची के टुकड़े करना उस 'लेबल' को फाड़ना है जो समाज ने उन पर चिपका दिया था। उन टुकड़ों को "लहर (मौज) से फूँक मारकर उड़ा देना" यह दर्शाता है कि वे अब उस पहचान के गुलाम नहीं रहना चाहते जो उनके बेटों ने दी है। उनकी मुस्कान यह सिद्ध करती है कि:

"इस आदमी का तो ठिकाने पर ही है (दिमाग ठिकाने पर है)। पूरी तरह ठिकाने पर है।" (शेलत, हिमांशी)

निष्कर्ष

'ठेकाणु' कहानी समाज के दिव्यांगों और वृद्धों के प्रति अभिगम (Attitude) का एक आईना है। इसके माध्यम से हम सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को देख सकते हैं:

परिवार का दिव्यांग व्यक्ति को एक 'केस' या 'मुसीबत' समझना समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है। व्यक्ति की पहचान को एक कागज के टुकड़े (पते की पर्ची) तक सीमित कर देना उसकी मानवीय गरिमा का हनन है। घर में रहते हुए भी वसंतलाल अकेले थे क्योंकि "कोई उनके सामने बैठकर अखबार पढ़ने वाला नहीं था" । अक्सर दिव्यांगों को भौतिक सुख-सुविधाएं तो दी जाती हैं, लेकिन उन्हें भावनात्मक सान्निध्य नहीं मिलता। समाज के तथाकथित 'निचले' स्तर के लोग (भिखारी, साधु, मानसिक रूप से अस्थिर लोग) अक्सर अधिक समावेशी होते हैं। उन्होंने वसंतलाल को बिना किसी शर्त के स्वीकार किया। दिव्यांग व्यक्ति अपनी स्थिति के बावजूद आत्म-सम्मान की भावना रखता है। वसंतलाल द्वारा पर्ची फाड़ना यह संदेश देता है कि दिव्यांगता का अर्थ व्यक्तित्व का अंत नहीं है।

निष्कर्षतः हिमांशी शेलत की यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि वास्तव में 'खोया' कौन है? वह वृद्ध जो अपना रास्ता भूल गया है, या वह समाज जो अपनों के प्रति संवेदना और सम्मान का रास्ता भूल गया है? दिव्यांग विमर्श के संदर्भ में यह कृति केवल एक व्यक्ति की अक्षमता की कहानी नहीं, बल्कि समाज की 'संवेदना की अक्षमता' पर एक गहरी टिप्पणी है।

संदर्भसूची :

- शेलत, हिमांशी. ठिकाना (ठेकाणु). – URL - https://gujarati.pratilipi.com/read/%E0%AA%A0%E0%AB%87%E0%AA%95%E0%AA%BE%E0%AA%A3%E0%AB%81%E0%AA%82-px8ohabkqlll-n2i61l2p35996y2
- "हिमांशी शेलतनी वार्ता/हिमांशी शेलत विशे." एकत्र फाउंडेशन विकि, 5 मार्च 2022.

Dr. Rajendrakumar Rameshbhai Bambhaniya

Project Director, Minor Research Project Funded by ICSSR &

Assistant Professor, Department of Gujarati, R. R. Lalan College, Bhuj

Bhuj, Kachchh – 370001

Email Id : bambhaniya22@gmail.com